

स्वंगं हा देवि नमः ॥ . ॥

श्री  
त्रिलोकसरन

॥ ॐ ॥

॥ . ॥ शतीचर बाहु प्रा गु ॥

आशा मरुती  
ASHA ARCHIVES

1.797



वंगला

ॐ श्री गणेशाय नमः ॥ ॥ ॐ नमः श्री वंगला देव्यै ॥ भैरव उवाच ॥ एतादेवि प्रवक्ष्यामि स्वरहस्यं च  
कामदम् सुखाशेषं तं शेषं कुरु गुणं सुरेश्वरि ॥ १ ॥ कवचं वंगलाम् रक्षा सकलेषु पदसु क  
हौ मत्सर्वं संप्रदत्तं तुल्यं गुणं च स रजः मना ॥ २ ॥ तैलै लोक्य विजयं नाम कवचं स्वप्नोत्तरम्  
नृगर्भं मन्त्रं च सिद्धि विद्यायका सितं ॥ ३ ॥ इह स्यं परं संगेयं साक्षादमृतं कर्म वृक्ष विद्याम  
मंतमर्हं भंपाशि जां क हौ ॥ ४ ॥ पूर्णं को न पचा सवर्णं मंतं मयै प्रतमं त्वभक्ष्यावचादिवे सिद्धौ

॥ १ ॥

पतिप्रमुखो निवत् ॥ ५ ॥ देव्युवाच ॥ भगवन् कुरु शास्त्रं विस्वनाथ सुरेश्वर ॥ ६ ॥ भैरव उवा  
च ॥ तैलै लोक्य विजयं नाम कवचं स्यात्पार्वति ॥ मन्त्रं गार्भस्य ह्रीं विदेव सुभैरव ॥ ७ ॥ उष्ट्रि कु  
क्ष्यो देवता च वंगलाम् रिव कीर्तिता ॥ श्रीं विजयं वशं किं स्वाहा कीर्तकमी हतम् ॥ ८ ॥ श्रीवर्गं फ  
हसि चार्धे विनिमोगा प्रकीर्तितः ॥ ९ ॥ अस्य ह्रीं तैलै लोक्य विजयं कवचं स्य भैरव ह्रीं विरुस्मिः क  
क्ष्यो वंगलाम् रिव देवता श्रीं वीजं ॐ शक्तिः स्वाहा कीर्तकं निवर्गं कलुषं च ये पाठे विनिमोगा देवि



आत्मा पठे त्वं सर्वं शत्रुं शत्रुं स्वरी विना आने नो सिद्धि सत्यग्यापय पार्वति अथ व्यानम्  
 चन्दो भासित मूर्ध्वजं नमः वशमूद्राभमाहा मूकता मपी मूज मूजो हाम मवूम सोमनामताज  
 किनिसतु संभन कारिणी ससि मूरिविषिता मरो भासिता मपे ते स्थां वगला मूरिवभगवति ॥ २ ॥  
 कारुपा भजे ॥ १० ॥ ॐ श्रीं मम सिते पातु देवि श्रीं वगला मूरवी ॐ ऐं कीं पा मे भा ह्ये वि सं भनका  
 रिनी ॐ ऐं ई ह भू जो पातु वगला के हा रिणी ॐ हं पा भू मे ने ते ना रसि हि सुभं करि ॥ ११ ॥

ॐ श्रीं शी पातु मे गरो तो अरौं ई भू वने स्वरी ॐ ऐं क्रि सद्यु ति ई उ डु ह्री वठे स्वरी ॐ क्रिं हूं हूं मपाव्य  
 मे ना शो तृ हृ सम सर स्वति ॥ १२ ॥ ॐ क्रिं हूं मे मूरव पातु हृ हृ ह्ये हृ न मसका ॥ १३ ॥ ॐ श्रीं  
 क्रि मे दना न पातु अशी भद्रकाः हिका ॐ श्रीं शी रसना पातु कं रव मद्यं च सपि का ॥ १४ ॥ ॐ ऐं सो  
 मे ह नू पातु उ च हं ज म नो त्र वाः ॐ श्रीं ग्री मे गलं पातु हृ हृ हृ गरो स्वरी ॥ १५ ॥ ॐ ह्री स्कन्दो मे स  
 दा पातु उ हृ चै व म नो त हा ह्री शी मे भू जो पातु तं थं दं व र व रि नि ॥ १६ ॥ ॐ की सो मे स नो पातु



वं गला

वनपपरमेस्वरीः अस्तुः सोमेरक्षवभो कं वं भंग वासिनि ॥ १० ॥ ॐ क्रीं हां पातु मे कृष्णि मं प्रं रं  
वन्नि वल्लभाः ॐ ऊं कैं द्रु मे पातु रेचो हं वहमो दरपिय ॥ ११ ॥ ॐ क्रीं जि पातु मे नाभि शय सन्म  
खपाहिनी ॐ ऐं सोः पातु मे वृष्ट सं हंः हात क ह पिणी ॥ १२ ॥ ॐ ऐं क्री पातु मे गृह्य के स्वरी ॐ  
शी उरु सदा व्या मे ई स्वर्ग गा मिनी ॥ १३ ॥ ॐ अस्तुः पातु मे जानू उं दुं ग रा वल्लभाः ॐ जि पातु मे जं  
घे ह्रीं हें घ अ घ हा रिणि ॥ १४ ॥ ॐ जि सः पातु मे गृह्यो हें ई लै ई दं ड च च णि काः ॐ ऐं ऊं मि पातु

॥ ३ ॥

पाषिरे ऐं ह्रज्ज त्प्र ॥ १५ ॥ ॐ शी क्री पातु मे पादौ डो डो हं हंः लभ गो दरिः ॐ से सर्व कं पुष्पौ व यु पातु  
पातु अं अति पुरे स्वरी ॥ १६ ॥ ॐ शी पुर्वे सदा व्या मे दं ट रा च ता रिणीः शी जी मां पातु वा द ह्रिं रा पा ई  
तं थं दं च ख च री ॥ १७ ॥ ॐ म मा पातु को वज्र्यो ई उट न पं पि त्वं यि हां ॥ ॐ शी मा पातु वेशा न्या ड फं वं  
वैन्द वे स्वरी ॥ १८ ॥ ॐ शी मां पातु च म्ये प्रा अं भं मं प्रं च यो गि निः ॐ ऐं मा पातु ने ह्रीं त्या रिं रं रा जे स्व  
री सदा ॥ १९ ॥ ॐ शी मां पातु वा यु वां हं हं मे ल व को रि निः ॐ पु प्रा ने च मां पातु ह्र चं द्रु जं वी



वं गला

गीश्वरी ॥ २७ ॥ ॐ मन्त्रा ऊच मां पातु यैः सं सकल वल्लभाः ॐ ह्रीं ह्रीं रित क्री पातु मां सप्रप्रेष सा कं  
भरिसदाः ॐ विष्ठादौ च मा पातु वो सं सागर सापिनि ॥ २८ ॥ क्लीं तिसाथे च मां पातु वो ऊरु हिरेश्व  
रिः ॐ क्लीं वामे मूलार्क व्यात् अं हति पुरश्चंदरि ॥ २९ ॥ विष्माक्षितु मया तवर्जित कवचेन तुः ॐ त  
मे सकलं पातु अक्ष की व गणेश मुखि ॥ ३० ॥ इति दं क वचं गुह्यं मंत्राकार मप्रसपर मृतै लोक विजु  
मं नाम सर्व वर्यैः मंत्रं स्मृतम् ॥ ३१ ॥ अथ काव्यं मदातव्यं मशो तव्य मवाचिक मः दुर्जना मत्कुलीना

प्रदिक्षाहि नमः पार्वति ॥ ३२ ॥ न दातव्यं न दावेमित्याग्यापरमेश्वरी ॥ अहिंसा तस्याख्याया विहितं  
शक्तिमान् ॥ ३३ ॥ कवचस्यास्य पठनात्सायकोदिक्षुते भवेत्; कवचसमिदं गोप्यं सिद्धिविद्याभय  
परमब्रह्मविद्यामयमूगमं प्रथमं निष्फलमूयदम्; न कस्य कथितं चैतत्तैल्लोके विजयेश्वरम् ॥ ३४ ॥  
प्रस्य स्मरणमाते देवि सद्यो वशी भवेत्तपठनाद्वारः ॥ चास्य कवचे सस्य मायक ॥ ३५ ॥ काले विरमते वि  
रो प्रथा दुर्विगलमूरिव दूदं वर्म स्मरन्ति संग्रामे प्रविशदा ॥ ३६ ॥ त्रिपद्येत् कवचं सततमुत्तम



साः च कोक्तुमः शत्रु काह स माने तुजित्वा स्व गृहमेवेति ॥ ३७ ॥ मूर्ध्नि च वाचक वचं मतुग भर्तु च कः व  
क्ता दिन मरासर्वान् सह माय स मान यत् ॥ ३८ ॥ च्छुत्वा गहेतु क वच सा च कस्य महे शो रिः व स माया  
ति स तु सा र भा स्व स तु सा ग राणा ॥ ३९ ॥ प्रत्या गारे य द्यो रेषु विद्वेष च रो गो तिष् क वचे संतु मं  
तु ग भर्प ते न र ॥ ४० ॥ कर्म ना मन सा वा व्या तं भ यं शां ति मे य ति शी दे व्या व ग हा मू ष्या क वचे स म  
या स्मृ तं ॥ ४१ ॥ ते हो के विज म ना म पुत्र यो न फ ल प्र दं ती या हं त त दे त स्मा हु मि क भोग विव च न् ।

॥ ४५ ॥

॥ ४२ ॥ वं च्छा च्छा र य त क क्षौ यु त प्रा प्य ति ना न्य था मृ त व त्स पि वि भू या क वचं च ग रे सं द्वा ॥  
॥ ४३ ॥ दि द्यौ यु च्छा च्छि ही न मु त स्या यु तो भ वि ष्य तिः सि ष्या प्र भ कि मु क्ता य गु रू भ कि प रा य च ॥  
४४ ॥ हो भ दं भ वि हि ना यः क व सं प्र दि स ता म् अ भ कि भ्यो पि पू ते भ्यो द ता कू षि भ वे न र ॥ ४५ ॥  
र वौ रा तौ च री दे हा स्ना न पू ज गृ हं व्र जे त् दि य म् क्ता ह म् हे न य ठे च र्म दे मृ त म् ॥ ४६ ॥ प्रा प्य न्या  
र्क स रा तौ च रा क्कं स्व मृ ह मे न ति म द हो शो म हे शा भि दे वी स त्पू न सं श मः ॥ ४७ ॥ ई दं तु क व च



वंगल सत्प्रमयाख्यातं नगासजे गोप्यतरं देवी गोपनिग्रंथप्रोतिवत् ॥ ५६ ॥ इति श्री विष्णुप्रां महेश्वर  
तंते उमा महेश्वरसंवादेशीवगमूखिः तैलोक्यवीर्यप्रनातकवचं संपूर्यते ॥ ॥ शुभं ॥ ॐ ॥

॥ ६ ॥

